'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 | अंक 10 | 04 अगस्त, 2019 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

जयंती विशेष

मर्यादाओं की लाज

इस पखवाड़े में आगामी 13 अगस्त को एवं भारतीय पंचाग अनुसार श्रावण शुक्ला चतुर्दशी तद्नुसार 14 अगस्त को हम सब महान क्षत्रिय एवं हम सबके आदर्श दुर्गादास जी की जयंती मनाने जा रहे हैं।

उन दुर्गादास की जयंती जिन्होंने अपनी पुण्य लोकों से प्रिय मां से ज्यादा उनके दूध की लाज को महत्व दिया। जिन्होंने स्नेह के मांगलिक एवं मादक अवसरों को ठुकरा कर कर्तव्य पालन के क्षणों में अपनी धर्मपत्नी के चूड़े की लाज रखी। वे दुर्गाबाबा जिन्होंने संतान से दूर रहकर आने वाली संज्ञान के गौरव की लाज रखी। जिन्होंने महाराजा जसवंतसिंह जी को दिए अपने वचन के लिए जीवन पर्यन्त संघर्ष को स्वीकार कर उनके अन्न की लाज रखी। वे दुर्गाबाबा जिन्होंने जोधपुर राजघराने के पुत्र एवं सारे मारवाड़ पर छाया बनकर महाराजा जसवंतसिंह के वचनों की लाज रखी। जिन्होंने कर्तव्य पालन के मार्ग पर अपने विश्वासों के लिए मरने की अपेक्षा जीवित रहकर अपने कर्तव्य की लाज रखी और स्वामी के नमक की पाई-पाई का लाज रखने के लिए अपने जीवन को जल जल कर जलने की कहानी बना दिया। वे दुर्गादास जिन्होंने मारवाड़ का राज्य देने के लालच को ठुकरा कर राजपूत चरित्र की लाज रखी।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

शिक्षण देने से पहले शिक्षित बनें

संघशक्ति में केंद्रीय कार्ययोजना बैठक संपन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ का काम लोक शिक्षण का काम है। लोक शिक्षण से पहले लोक संग्रह एवं लोक संपर्क किया जाता है। इन सबके लिए योग्य शिक्षक की आवश्यकता होती है। शिक्षण वही दे सकता है जो स्वयं शिक्षित हो। बोलते समय यह विचार करना आवश्यक है कि जो मैं बोल रहा हूं वह मेरे जीवन में कितना है। कहने का अधिकारी वही है जो कहता है वह स्वयं करता भी है। तब ही उस बात में प्रभाव पैदा होता है। इसलिए शिक्षण देने से पहले शिक्षित होना आवश्यक है। अपना निरंतर अंतरावलोकन आवश्यक है।

संघ के केन्द्रीय कार्यालय 'संघ शक्ति' में 20 व 21 जुलाई को आयोजित केन्द्रीय बैठक में उपस्थित केन्द्रीय कार्यकारियों व संभाग प्रमुखों सहित आमंत्रित सहयोगियों से चर्चा करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि प्रज्ञा संपन्नता, शास्त्रज्ञ, लोक व्यवहार का अध्ययन, आकांक्षा रहित, प्रतिभा संपन्न, शांत स्वभाव, सहजता, सहनशक्ति, कथनी व करनी में फर्क न होना, दूसरों के मन को आकर्षित करना, अनिंदा, माधुर्य, उच्चारण शुद्धि आदि एक उपदेशक की अहर्ताएं हैं। संघ के कार्य में लोक शिक्षण में हमें भी किसी न किसी रूप में शिक्षक की भूमिका निभानी पड़ती है इसलिए हमें भी इन सभी गुणों से संपन्न होना चाहिए। उन्होंने बताया कि लोक संग्रह का अर्थ ऐसे लोगों का संग्रह करना होता है जो श्रेष्ठ बनकर जिन काम को हम कर रहे हैं उसमें सहयोगी बनें। इसके लिए हमें उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर हमारे उद्देश्य को ही उनका उद्देश्य बनाना पड़ता है। इसीलिए हर लोक संग्रहक को निरंतर स्वयं का मूल्यांकन कर स्वनिर्माण करते रहना चाहिए।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

वैराग्य में स्थायित्व लायें : संघ प्रमुख श्री

एक सेठ नियमित रूप से सत्संग सुनने जाते थे, प्रेमपूर्वक सत्संग सुनते और रोते रहते। सत्संग करने वाले महात्मा ने जब रोने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि मेरा कल्याण कब होगा? संत ने ध्यान लगाकर बताया कि तुम्हारा एक जन्म शेष है, उस जन्म में तुम सुअर बनोगे और उसके बाद कल्याण होगा। सेठ ने घर आकर पुत्र से कहा कि मेरा अगला जन्म सुअर के रूप में उक्त स्थान पर होगा, मेरे सिर पर सफेद टीका होगा, तुम उसे तुरंत मार देना जिससे मेरा कल्याण हो जाए। बेटा व्यवसाय के लिए कहीं बाहर चला गया और पिता की बात भूल गया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

विसंगतियों को लेकर बनेगा मंत्री समूह

आर्थिक आधार पर आरक्षण से वंचित वर्ग को दिए गए 10 प्रतिशत आरक्षण में कृषि भूमि, आवासीय भूखंड, आवासीय मकान आदि की अव्यवहारिक शर्तों के कारण अनेक विसंगतियां हैं। साथ ही इस आरक्षण में अधिकतम आयु आदि की भी छूट नहीं दी गई है। इसके साथ ही दिए गए एम बी सी आरक्षण की तरह इसे प्रक्रियाधीन भर्तियों में भी लागू नहीं किया गया। इन सब विसंगतियों को लेकर श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन विगत मार्च माह से ही विभिन्न माध्यमों से सरकार तक अपनी बात पहुंचा रहा है। विधानसभा सत्र के दौरान विधायक इस मुद्दे को उठायें, इसके लिए विभिन्न क्षेत्रों के विधायकों से मिलकर फाउंडेशन के लोगों ने विषय को समझाया एवं सहयोग मांगा। जोगेश्वर जी गर्ग, संजय जी शर्मा, कालीचरण जी सर्राफ, राजेन्द्र सिंह जी राठौड़, राम लाल जी शर्मा, बलजीत जी यादव आदि विधायकों ने इस विषय को सदन में उठाया। अनेक विधायकों ने लिखित रूप में विधानसभा में प्रस्ताव रखा। वित्त एवं विनियोग विधेयक पर बहस के दौरान नेता प्रतिपक्ष गुलाब चंद जी कटारिया ने भी प्रमुखता से इस विषय पर हमारा पक्ष रखा। अंत में इसी विधेयक पर चर्चा का जबाब देते हुए माननीय मुख्यमंत्री ने विधानसभा में घोषणा की कि इस विषय की विसंगतियों को दूर करने के लिए एक मंत्री समूह का गठन किया जाएगा एवं उसकी रिपोर्ट पर कार्यवाही की जाएगी। अब हमारा दायित्व बनता है कि हम इस आरक्षण की विसंगतियों से संबंधित तथ्य व आंकड़े एकत्र करें एवं इस विषय पर बनने वाले मंत्री समूह के समक्ष मजबूती से अपना पक्ष रखें ताकि इस आरक्षण का वास्तविक लाभ समाज को दिलवाने के लिए अनुकूल सिफारिश मंत्री समूह द्वारा की जाए। यह काम सब के सहयोग से ही संभव है। हर व्यक्ति अपना काम समझ कर तथ्यों के संकलन में मदद करेगा एवं अपने स्तर पर उचित माध्यम से मंत्री समूह तक पहुंचाएगा, ऐसी अपेक्षा है।

प्रणेता से प्रेरणा

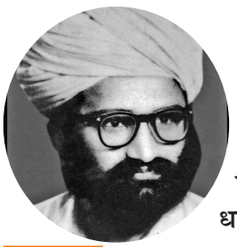

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

पिलानी में अध्ययन पूरा कर पूज्य तनसिंह जी वकालात की पढ़ाई करने नागपुर चले गए। नागपुर में वकालात के अध्ययन के दौरान ही उन्होंने 22 दिसंबर 1946 को संघ की स्थापना की। गांधीजी की हत्या के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर लगे प्रतिबंध के खिलाफ जेल यात्रा की। चौपासनी स्कूल के अधिग्रहण के खिलाफ हुए आंदोलन में महत्ती भूमिका अदा की एवं वकालात पूर्ण होने पर बाड़मेर आकर वकील के रूप में काम शुरू किया। इसी बीच 1949 में बाड़मेर नगर पालिका के चुनाव हुए और वे नगरपालिका के अध्यक्ष चुन लिए गए। उस समय उनकी उम्र लगभग 25 वर्ष थी। सरकारी भवनों के निर्माण कार्य के ठेके लेने वाले एक ठेकेदार ने उनसे संपर्क किया एवं उनके मकान की चार दीवारी बनाने का प्रस्ताव रखा। पूज्य श्री ने कहा कि उनके पास इतना धन नहीं है कि वे चार दीवारी बनवा सकें इसलिए ऐसा करने में वे असमर्थ हैं। ठेकेदार ने अनेक बार आग्रह किया तो उन्होंने उसे दूसरे दिन आने को कहा। ठेकेदार के जाने के बाद उन्होंने अपने साथ काम कर रहे एक वरिष्ठ वकील से सलाह की एवं ठेकेदार के प्रस्ताव के बारे में बताया। वकील साहब ने उनसे कहा कि यह आपके घर की चारदीवारी बनाकर आपको उपकृत करना चाहता है एवं आपसे निकटता हासिल कर उस निकटता का लाभ उठाकर अवैधानिक लाभ लेना चाहता है। इसलिए मेरी राय में आपको इसके प्रस्ताव से बचना चाहिए। पूज्यश्री ने उनकी इस राय की गांठ बांध ली एवं इसके बाद वे विधायक रहे, राजस्थान विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष भी रहे, सांसद रहे, अनेक संसदीय समितियों के सदस्य भी रहे लेकिन इस प्रकार के लोगों से सदैव दूरी बनाकर रखी जो उनकी निकटता का अवैधानिक लाभ ले सकें। सार्वजनिक जीवन की शुचिता के लिए आवश्यक इस सावधानी की जीवन के प्रारंभ में मिली सीख का उन्होंने जीवन भर पालन किया। ऐसे अनेक अवसर आये जब यह सावधानी भंग हो सकती थी लेकिन संकल्प के धनी लोगों के लिए ऐसे छोटे-मोटे अवसर कोई समस्या पैदा नहीं करते और ऐसे ही छोटे-छोटे संकल्प उन्हें अनेक लोगों के संकल्प की प्रेरणा बना देते हैं। इसीलिए तो ऐसे पुरुष महापुरुष की स्थिति प्राप्त कर सामान्यजन के लिए प्रेरणा पूंज बन पाते हैं, श्रेष्ठता के मार्ग के प्रणेता बन जाते हैं। पूज्य श्री हमारे ऐसे ही प्रणेता थे जिनका संपूर्ण जीवन साधक जीवन के लिए प्रेरणा पूंज है।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

विगत अंक में कला वर्ग के छात्रों हेतु 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात उपलब्ध डिग्री/कोर्स के बारे में जानकारी प्राप्त करने के पश्चात अब हम उनमें से कुछ प्रमुख डिग्री/कोर्स के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करेंगे।

1. बी. ए. (बैचलर ऑफ आर्ट्स):- यह कला वर्ग के छात्रों के लिए सर्वसुलभ व लोकप्रिय कोर्स है। यह 3 वर्षीय स्नातक डिग्री है जो देश भर में अधिकांश स्थानों पर प्रवेश हेतु सहज रूप से उपलब्ध है। सबसे सरल माने जाने वाला यह कोर्स महाविद्यालयों में सीट्स की पर्याप्त संख्या तथा छोटे कस्बों में भी आसानी से उपलब्ध होने के कारण छात्रों के साथ छात्राओं में भी अत्यधिक लोकप्रिय है। सरकारी नौकरी प्राप्त करने के इच्छुक अभ्यर्थियों की भी यह पहली पसंद है क्योंकि राज्य व केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकारियों सहित अधिकांश सरकारी नौकरियों हेतु न्यूनतम योग्यता स्नातक रखी जाती है।

बी.ए. के अंतर्गत छात्रों के लिए दो प्रकार के विकल्प उपलब्ध हैं - सामान्य बी. ए. तथा बी. ए. ऑनर्स। दोनों की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है-

(क) सामान्य बी. ए.- इसमें छात्र द्वारा विभिन्न विषयों का सामान्य अध्ययन किया जाता है। अलग-अलग विश्वविद्यालयों में विषयों के विभिन्न समुच्चय छात्रों हेतु उपलब्ध करवाए जाते हैं। अलग-अलग विश्वविद्यालयों में 2+2 अथवा 2+3 के पैटर्न में विषय उपलब्ध होते हैं, जिनमें 2 भाषा तथा 2 अथवा 3 मुख्य विषय यथा इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, भाषा साहित्य आदि होते हैं। इनके अलावा कुछ वैकल्पिक विषय भी छात्रों को पढ़ने होते हैं किन्तु किसी भी विषय का विशेष तथा विस्तृत अध्ययन इसमें नहीं किया जाता है।

(ख) बी. ए. ऑनर्स - यह भी 3 वर्षीय स्नातक डिग्री है किंतु इसमें विभिन्न विषयों का सामान्य अध्ययन न किया जाकर किसी एक विषय का विशेष अध्ययन किया जाता है यथा- इतिहास ऑनर्स, राजनीति विज्ञान ऑनर्स अथवा अंग्रेजी साहित्य ऑनर्स आदि। इसमें मुख्य विषय के अतिरिक्त जो विषय पढ़ने होते हैं वे भी मुख्य विषय से पूर्णत: असम्बद्ध न होकर उसके पूरक होते हैं।

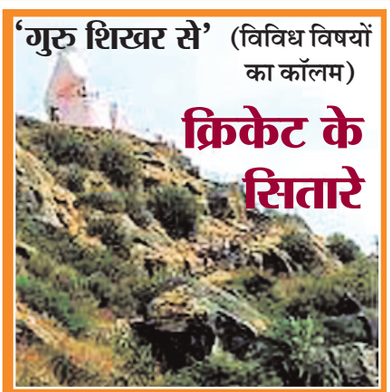

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

प्रारंभ में क्रिकेट खेल भारत में राजघरानों एवं उच्च वर्ग तक ही सीमित रहा है। जामनगर (गुजरात) के महाराजा रणजीतसिंह जाड़ेजा इंग्लैण्ड की तरफ से तब खेलते थे जब भारत में क्रिकेट की विधिवत शुरूआत ही नहीं हुई थी। वे अपने समय के विश्व के महानतम खिलाड़ी रहे। उन्हीं के नाम से भारत में 'रणजी ट्राफी' को राष्ट्रीय प्रतियोगिता के रूप में खेला जाता है। रणजी के भतीजे महाराज दिलीपसिंह के नाम से दिलीप ट्राफी खेली जाती है। आंध्रप्रदेश के विजय नगरम रियासत के गजपति राजू महाराजा के नाम से 'बिज्जी' ट्रॉफी आयोजित होती है। उदयपुर (मेवाड़) के महाराणा भगवतसिंह ने राजस्थान में क्रिकेट को खूब पनपाया तथा राजस्थान की रणजी टीम बरसों तक उनके द्वारा प्रायोजित रही। राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष रहे स्व. लक्ष्मणसिंह डूंगरपुर एमसीसी के विरुद्ध खेले तथा उनके पुत्र राजसिंह डूंगरपुर को तो क्रिकेट की चलती-फिरती जाति कहा जाता था। वे खिलाड़ी कोच, चयनकर्ता, मैनेजर व भारतीय क्रिकेट कन्ट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) तथा राजस्थान खेल परिषद के अध्यक्ष रहे। बांसवाड़ा के महारावल हनुवन्त सिंह ने भारत की तरफ से खेलते हुए अपने पहले ही टेस्ट में शतक जड़ा। वे भारतीय टीम के चयनकर्ता तथा मैनेजर रहे। बांसवाड़ा राजपरिवार के सूर्यवीर सिंह अच्छे क्रिकेटर रहे। इन्दौर, बड़ोदा व ग्वालियर राजघरानों ने भी क्रिकेट को खूब आगे बढ़ाया। ग्वालियर महाराजा माधवराव सिंधिया भारतीय क्रिकेट कन्ट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष रहे। पूर्व सांसद एवं वर्तमान में उत्तर प्रदेश सरकार के काबिना मंत्री चेतन सिंह चौहान सुनिल गावस्कर के साथ टेस्ट क्रिकेट में ओपनिंग करते थे। उत्तरप्रदेश से आने वाले रुद्र प्रताप सिंह (आर.पी.) भारत के तेज गेंदबाज रहे। जामनगर राजघराने के पूर्व सांसद दौलतसिंह के पुत्र अजय सिंह जाडेजा भारतीय टीम में हरफनमौला ऑल राउंडर रहे हैं। अनेक अवसरों पर उन्होंने अपने बलबूते भारतीय टीम की नैया पार की है।

कभी अभिजात्य वर्ग का खेल माना जाने वाला क्रिकेट भारत में खेला व देखा जाने वाला सबसे लोकप्रिय खेल है। आज यह जनमानस का खेल हो गया है। अलग-अलग प्रान्तों, धर्मों, संप्रदायों अथवा जातियों के खिलाड़ी एक मजबूत टीम बनाकर भारत के लिये खेलते हैं। खेल में पूरी टीम का योगदान उसकी जीत में निहित होता है। आजकल क्रिकेट भारत में एक तरह से जुनून है। अभी इंगलैण्ड में हो रहे विश्व कप क्रिकेट में भारत को जीत का मजबूत दावेदार समझा जाता था। औद्योगिक नगरी मेनचेस्टर में ओल्ड टेफर्ड मैदान पर खेले गये सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड से हारकर क्रिकेट में मक्का लार्डस में फाइनल खेलने का हमारा सपना चकनाचूर हो गया। खैर क्रिकेट अनिश्चितता का खेल है। न्यूजीलैंड का स्कोर पहले खेलते हुए 339/8 था। बाद में खेलते हुए भारतीय टीम का शीर्ष क्रम ताश के पत्तों की तरह ढह गया। चार ओवर में पांच रन पर दोनों ओपनर सहित तीन खिलाड़ी पैवेलियन जा चुके थे। 92/6 के स्कोर पर सातवें विकेट के लिये महेन्द्रसिंह धोनी व रविन्द्र सिंह जाड़ेजा ने भारतीय टीम की कमान मुश्किल हालात व दबाव में संभाली। यह एक संयोग ही था कि भारतीय टीम व दर्शकों की आशाएं अब दो राजपूत खिलाड़ियों पर ही टिकी थी। दोनों ने 116 रन की साझेदारी की। धोनी ने विकेट के बचाते हुए सम्भल कर खेलते हुए 72 बॉल में एक चौके व एक छक्के की सहायता से 50 रन बनाये, वहीं जाड़ेजा ने आक्रामक खेलते हुए 59 बॉल में चार चौके एवं चार छक्के की सहायता से 77 रन बनाये। लेकिन वे खेल की मंजिल तक पहुंचने से पूर्व आऊट हो गये और भारत 18 रन से सेमिफाइनल हार गया। जाड़ेजा ने जब अपना अर्धशतक बनाया तो हमेशा की तरह काठियावाड़ी तलवार बाजी जैसे अपने क्रिकेट बैट को चलाकर खुशी का इजहार किया। कमेन्ट्री बॉक्स से कहा गया, वाह! लो चल पड़ी राजपूतानी तलवार। जब सब धराशायी हो गये तो दो ठाकुर मैदान में खूब लड़े। सोशल मीडिया में उन दोनों के जुझारू खेल पर खूब कमेन्ट्स आये। इन दोनों का खेल तो अच्छा लगा ही और लोगों में उनकी संघर्षपूर्ण पारी की चर्चा में कौम की चर्चा मन को भा गई। धोनी और जाड़ेजा दोनों हरफनमौला खिलाड़ी हैं। टीम में सबकी सहायता करते हैं। गंभीर हैं परन्तु हंसमुख स्वभाव से माहौल को हल्का बना देते हैं। महेन्द्र सिंह के गांव का नाम 'धोनी' है जो उत्तराखण्ड के उल्मोड़ा जिले में है। धोनी के पिता नौकरी के लिये झारखंड के रांची शहर में बस गये। धोनी ने उत्तराखंड की साक्षी रावत से शादी की है। साक्षी ने औरंगाबाद के ताज समूह से होटल मैनेजमेंट कर रखा है। इस विकेट कीपर बल्लेबाज की कप्तानी में भारत ने टी-20 विश्वकप में एवं एक दिवसीय विश्व कप, चैंपियन ट्रॉफी जीती है तथा टेस्ट में पहली बार नम्बर वन टीम बनी। धोनी प्रादेशिक सेना में मानद ले. कर्नल पद पर हैं। जाड़ेजा जामनगर (गुजरात) से आते हैं। उन्हें क्रिकेट कोचिंग दिलाने के लिये उनके पिता अपने छोटे से गांव से आकर राजकोट में रहने लगे। धोनी ने जाड़ेजा को 'सर' का उपनाम दिया तथा साथी खिलाड़ी उन्हें प्यार से 'जडु' कहते हैं। धोनी की तरह जाड़ेजा भी माताजी के परम भक्त हैं। वे पैदल यात्रा कर भुज के पास आशापुरा माताजी के दर्शनार्थ जाते हैं। नवरात्र के गरबों में तलवार बाजी करते हैं, घोड़े पालने का शौक है तथा राजपूती पहनावा पसंद करते हैं। रविन्द्र जड़ेजा की शादी रीवा बा सोलंकी से हुई है। धोनी एवं जाड़ेजा आज के विश्व क्रिकेट के दैदिप्यमान सितारे हैं।

सामूहिक शाखा भ्रमण, मुंबई

विगत वर्षों में मुंबई में संघ कार्य ने अच्छी गति पकड़ी है। अनेक स्थानों पर प्रतिदिन शाखा लगती है एवं रविवार के दिन लगने वाली साप्ताहिक शाखा में तो संख्या सैकड़ा को छू लेती है। रोजी-रोटी कमाने राजस्थान से मुंबई आये युवाओं की पहल पर गतिमान हुआ यह कारवां निरंतर आगे बढ़ रहा है एवं अब स्थानीय समाज बंधुओं, राजस्थान के अलावा अन्य प्रदेशों से आये युवाओं को भी आकर्षित करने लगा है। विगत 14 जुलाई को मुंबई की भायंदर, मुंबई, मलाड़, ऐरोली, कल्याण खारघर कांजुर-मार्ग आदि शाखाओं ने सामूहिक शाखा भ्रमण का कार्यक्रम रखा। 200 से अधिक स्वयंसेवक विभिन्न बसों द्वारा मुंबई व पूना के बीच स्थित हिल स्टेशन लोनोवला पहुंचे। अनौपचारिक रूप से सांघियक परिवार के अपनत्व को महसूस करने के लिए ऐसे अवसर बहुत सहायक होते हैं। सभी स्वयं सेवकों ने इस अवसर का भरपूर लाभ उठाया। संघ के पारिवारिक भाव से सराबोर हुए। प्रकृति के मध्य स्थित रमणीक स्थल पर अपनी प्रकृति के अनुरूप आगे बढ़कर जीवन को सार्थक करने के मार्ग श्री क्षत्रिय युक संघ के बारे में सभी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। वरिष्ठ स्वयंसेवक पाबूदानसिंह दौलतपुरा व संभाग प्रमुख नीरसिंह सियाणा के सान्निध्य में मार्गदर्शक चर्चाएं की गई।

संभागीय बैठक संपन्न

बालोतरा संभाग की संभागीय बैठक 14 जुलाई को श्री कल्ला रायमलोत राजपूत छात्रावास सिवाना में संपन्न हुई। संभाग प्रमुख मूलसिह काठाड़ी के नेतृत्व में संपन्न बैठक में तेलवाड़ा व गिड़ा में बालकों का शिविर व पादरु में बालिकाओं का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर तथा पिपलून में सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के लिए प्रस्ताव तैयार किया गया। पूज्य नारायण सिंह रेड़ा, वीर दुर्गादास राठौड़; आयुवान सिह हुडील की जयंती व पुज्य तनसिंहजी की पुण्यतिथि एवं संघ स्थापना दिवस कार्यक्रम आयोजन करने के स्थान तय किए एवं वहां समारोहपूर्वक कार्यक्रम मनाने का निर्णय लिया गया। शाखा स्तर पर सभी महापुरुषों के स्मृति दिवस मनाने की चर्चा की गई। वर्तमान में लग रही शाखाओं की समीक्षा की गई एवं जो शाखाएं वर्तमान मे सुचारू नहीं हैं उन्हें पुन: शुरू करने का निर्णय लिया गया।

अहमदाबाद ग्राम्य प्रांत की बैठक

गुजरात में संघ के अहमदाबाद ग्रामीण प्रांत की कार्य योजना बैठक 23 जुलाई को काणेटी में संपन्न हुई। बैठक के प्रांत प्रमुख ने बताया कि 22 दिसंबर तक इस प्रांत में पांच शिविर लगने तय हुए हैं जिनमें से एक लग चुका है। शेष चार में- बाल शिविर, एक बालिकाओं का एवं 2 बालकों के चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर शामिल हैं। इन सभी शिविरों की व्यवस्था, संचालन, सहयोगियों, संख्या को लेकर दायित्व विभाजन किया गया। शाखाओं की स्थिति की समीक्षा की गई। शिविर एवं शाखा के अलावा लोक संपर्क के लिए युवा स्नेहमिलन महिला स्नेहमिलन, कर्मचारी, सेवानिवृत्त कर्मचारी एवं व्यवसायी स्नेह मिलन को लेकर भी चर्चा की गई। संघ स्थापना दिवस, पूज्य तनसिंहजी जयंती आदि सांघिक पर्वों के साथ अन्य उत्सवों की भी योजना बनी। आगामी दिनों में माननीय संघ प्रमुख श्री के गुजरात प्रवास के दौरान अधिकतम स्वयंसेवकों से उनका सान्निध्य लाभ लेने के लिए कहा गया। संघशक्ति पथप्रेरक की सदस्य संख्या को लेकर भी चर्चा की गई।

शिविर की तैयारी हेतु बैठक

बनासकांठा के मेजरपुरा में होने वाले चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर की तैयारी बाबत 21 जुलाई को शिव मंदिर मेजरपुरा में स्थानीय सहयोगियों की बैठक रखी गई। बैठक में उपस्थित समाज बंधुओं को संघ की कार्यप्रणाली का परिचय देते हुए शिविर की दिनचर्या एवं व्यवस्था संबंधी जानकारी दी गई। शिविर स्थान के लिए सरस्वती विद्यालय मेजरपुरा को तय किया गया एवं व्यवस्था के लिए स्थानीय समाज बंधुओं की समिति बनाकर दायित्व सौंपा गया।

शहर इकाई का गठन

मेवाड़ क्षत्रिय महासभा की उदयपुर शहर इकाई के चुनाव 14 जुलाई को संपन्न हुए। चुनाव अधिकारी हरिसिंह भाटी द्वारा घोषित चुनाव परिणाम अनुसार चन्द्रवीरसिंह करेलिया को अध्यक्ष, महेन्द्रसिंह पाखंड को उपाध्यक्ष, देवेन्द्रसिंह चौहान को मंत्री, जितेन्द्रसिंह हमेरगढ को संयुक्त सचिव व राम सिंह खेड़ा को कोषाध्यक्ष चुना गया।

'संघ शिक्षण अपनें व्यवहारिक जीवन में ढालें'

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक व गुजरात के शाखा लेखा प्रभारी छन्नू भा पच्छेगांम 13 व 14 जुलाई को सूरत प्रांत की शाखाओं के दौरे पर रहे। इस दौरान रविवार को सारोली के वीर अभिमन्यु पार्क में सामूहिक शाखा में मिलन कार्यक्रम रखा गया जिसमें छन्नू भा ने शाखा के शिक्षण का महत्व बताया और कहा कि हम बताये हुए आदर्शों का अभ्यास निरंतर करते रहें तो शाखा का शिक्षण हमारे जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है। उन्होंने पूज्य श्री तनसिंह जी की पंक्तियां ''करने आये कर न सके तो, जीवन तरुवर व्यर्थ फले हैं'' को समझाते हुए अपने उद्देश्य के प्रति जीवन जीने की सलाह दी।

इससे पूर्व संघ की उतरान व कराड़ा शाखा में भी मिलन कार्यक्रम रखा गया जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक प्रवीणसिंह बावलियारी का भी सान्निध्य मिला। कार्यक्रम में प्रांत प्रमुख खेतसिंह चांदेसरा ने संघ के आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी।

राह (थराद) में शिविर संपन्न

संघ के बनासकांठा प्रान्त के गांव राह तहसील थराद में 27 से 29 जुलाई तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ जिसका संचालन अजीत सिंह कुणघेर ने किया। इस शिविर में राह, डुवा, सिया, गोला, नारोली, वलादर, केसरगाँव, पीलुडा, करबुण, ताखुआ, लाछीवाड़, जजाम, खानपुर, बाड़मेर, नांदला, धेचाणा, नालोदर, रामसण, गोलवी, पीलुड़ा, माडका, लोरवाड़ा, लिबोणी, अरजणपुरा और कुणघेर के 108 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया ।

शिविर में बनासकंठा प्रान्त के सहयोगी स्वयंसेवकों के स्नेह मिलन का आयोजन हुआ एवं राह गाँव की माताओं और बालिकाओं की एक बैठक भी रखी गई।

सामूहिक शाखा जैसलमेर

जैसलमेर शहर की इंदिरा कॉलोनी में समाज बंधुओं के अनेक छात्रावास हैं। इन छात्रावासों के अलावा अनेक युवा भी यहां किराए पर रहते हैं। सबसे संपर्क कर विगत दिनों यहां शाखाएं प्रारंभ हुई। 28 जुलाई को प्रात: विवेकानंद विद्यालय में इन सब शाखाओं की सामूहिक शाखा लगाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबूसिंह बेरसियाला के निर्देशन में लगी इस शाखा में विवेकानंद छात्रावास, काले डूंगरराय छात्रावास, तेम्बड़ेराय छात्रावास, हरसिंद्धि छात्रावास एवं मॉडर्न छात्रावास की शाखाओं में 178 स्वयंसेवक शामिल हुए। इसी दिन जवाहर राजपूत छात्रावास की साप्ताहिक शाखा में 92 संख्या रही।

संपादकीय Column

समाज का काम और समाज के व्यक्ति का काम

हमारा सामाजिक भाव हमें समाज से जोड़ता है। वही भाव हमें समाज के लिए क्रियाशील भी करता है। वास्तव में तो भाव हृदय की उपज है। पीड़ा, प्रेम आदि इसका प्रकटीकरण है। भावना प्रधान व्यक्ति प्रेम और पीड़ा को महसूस करता है और उसका वह प्रेम व पीड़ा उसे क्रियाशील बनाते हैं। यही भावनाएं जब हमें समाज से जोड़ती हैं तो सामाजिक भाव बनती हैं और हमारी भावनाएं जब सामाजिक बनती हैं तो फिर समाज के लिए प्रेम और पीड़ा पैदा होती है। ऐसी पीड़ा या प्रेम हमें समाज के लिए क्रियाशील करती है और हमारी वही क्रियाशीलता समाज का काम बनती है। ऐसी सभी क्रियाशीलताएं व्यक्ति की स्वयं अपने लिए या केवल अपने परिवार के लिए की जाने वाली क्रियाशीलताओं से श्रेष्ठ होती हैं, वास्तव में तो ज्यों ही व्यक्ति अपने अलावा अन्यों के लिए सोचना शुरू करता है, उस सोच के अनुरूप क्रियाशील होता है तो वह उत्तरोत्तर श्रेष्ठता की ओर बढ़ना शुरू करता है। अपने दायरे को बढ़ाना या विस्तृत करना ही तो प्रगति है। इसीलिए हमें स्वयं के अतिरिक्त परिवार के लिए जीने वाला व्यक्ति अच्छा लगता है। मां को इसीलिए तो महत्ता मिलती है कि वह स्वयं की अपेक्षा परिवार के लिए अधिक जीती हैं। परिवार से यह दायरा समाज की तरफ बढ़ता है और जिनका दायरा जितना अधिक विस्तृत होता है वे उतने ही श्रेष्ठता की ओर उन्मुख होते जाते हैं। जब दायरे की सीमाएं अशेष होकर असीम में प्रवेश होता है तो उसे ही तो हमारे आप्त पुरुषों से परम प्राप्ति बताया है। इस प्रकार यह सर्वसिद्ध है कि दायरे की सीमाओं का उत्तरोत्तर विस्तार होना ही प्रगति का मापदंड है। इसीलिए खुद के लिए जीने वाले से परिवार के लिए जीने वाला श्रेष्ठ होता है। परिवार के लिए जीने वाले से समाज के लिए जीने वाला श्रेष्ठ होता है। समाज के लिए जीने वाला ही समाज का काम कर पाता है। लेकिन शीर्षक में हमने दो तरह के काम की चर्चा की है, समाज का काम और समाज के व्यक्ति का काम। आप कह सकते हैं कि इसमें क्या अंतर है? समाज व्यक्तियों से मिलकर ही तो बनता है। ऐसे में समाज के व्यक्तियों का काम ही समाज का काम कहलायेगा लेकिन गहराई से सोचेंगे तो इसमें अंतर है और उस अंतर को समझे बिना हम समाज के काम की अवधारणा को भी पूरी तरह समझ नहीं पायेंगे। आप समाज के किसी व्यक्ति का स्थानांतरण करवा देते हैं या किसी व्यक्ति की नौकरी लगने में सहायता कर देते हैं या किसी के लिए थाने में, कचहरी में या किसी सरकारी कार्यालय में फोन कर देते हैं। आप समाज के किसी व्यक्ति की कुछ पैसों की सहायता कर देते हैं या समाज के किसी कर्मचारी अधिकारी की उच्चाधिकारी को सिफारिश कर देते हैं। ये सब काम समाज के व्यक्तियों के काम हैं। निश्चित रूप से ऐसा करने से उन संबंधित व्यक्ति या उनसे जुड़े लोगों को लाभ होता है। यह काम दायरे को बढ़ाने वाला काम है। इसलिए निश्चित रूप से श्रेष्ठ काम भी है लेकिन फिर भी ये समाज का काम नहीं बल्कि समाज के व्यक्ति विशेष के काम है। तो फिर प्रश्न हमारा यह हो सकता है कि फिर समाज का काम क्या हो? तो इसका भी सीधा सा जवाब है कि जो काम संपूर्ण समाज को प्रभावित करे वह समाज का काम है। जैसे समाज का सर्वश्रेष्ठ काम तो संपूर्ण समाज को श्रेष्ठ की ओर प्रवाहित करना है। सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर है इसलिए जिस काम से संपूर्ण समाज को सर्वश्रेष्ठ की ओर उन्मुख करने का यत्न होता हो वह काम समाज का सर्वश्रेष्ठ काम कहलायेगा। ऐसा काम बहुत मंथर गति से अपने लक्ष्य की ओर गतिमान होता है और यदि गहन निरीक्षण नहीं किया जाये तो मंथर गति के कारण ऐसा लगता है जैसे कुछ हो ही नहीं रहा। इसलिए प्राय: ऐसे काम सामान्य मेधा शक्ति को प्रथम दृष्टया आकर्षित भी नहीं करते। इस काम की प्रकृति आध्यात्मिक होने से भौतिक प्राप्तियों के पीछे दौड़ रहे लोगों को यह काम रुचिकर भी नहीं लगता। लेकिन इसमें भी कोई दो राय नहीं कि श्रेष्ठतम प्रयास तो श्रेष्ठतम की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले ही होते हैं। श्रेष्ठतम (परमेश्वर) को पाने के लिए कर्तव्य कर्म को सर्वाधिक उपयुक्त बताया गया है। ऐसे में इस काम को करने के लिए समाज को उसके कर्तव्य पथ पर आरूढ़ करने के लिए तैयार किया जाता है और श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसा ही काम है। यह शत प्रतिशत समाज का काम है। समाज के छोटे-बड़े, अमीर-गरीब, ग्रामीण-शहरी, स्त्री-पुरुष, युवा-वृद्ध आदि सभी के लिए यह करणीय है। श्रेष्ठता के स्तर पर नीचे उतरें तो सर्वश्रेष्ठ के साथ-साथ सांसारिक प्राप्तियां भी अपेक्षित होती हैं। ऐसे में वे प्राप्तियां जो संपूर्ण समाज को लाभान्वित करती हैं या समाज के किसी व्यक्ति विशेष को नहीं बल्कि प्रत्येक सामान्य व विशिष्ट व्यक्ति को प्रभावित करती हैं, उनके लिए उद्यमशील होना भी समाज का काम है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

खरी-खरी...

श्रीमान् समझदार!

शरीर, बुद्धि और हृदय मनुष्य को परमेश्वर प्रदत्त महत्वपूर्ण साधन हैं। इन साधनों का उपयोग कर मनुष्य अपनी दैहिक, दैविक एवं भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। तीनों का आदर्श संयोजन व्यक्ति को उसके जीवन की सार्थकता सिद्ध करने में सहायता करता है। लेकिन सभी मनुष्यों में यह आदर्श संयोजन नहीं पाया जाता। कुछ लोग शरीर से अधिक शक्तिशाली होते हैं एवं बुद्धि के ब्रह्मचारी होते हैं। कुछ लोगों की बुद्धि तो तलवार की धार सी तेज होती है लेकिन शरीर अक्षम होता है। कुछ लोगों का अति भावुक होना उनके हृदय की सक्रियता का द्योतक होता है। सामान्य अवधारणा में शरीर की क्रियाशीलता पर बुद्धि की सक्रियता हावी रहती है। इसलिए बुद्धिमान लोगों को हम समझदार कहते हैं। मेधा शक्ति ही किसी वस्तु के परिपूर्ण आकलन का विश्वस्त साधन है और इस प्रकार का आकलन ही समझ पैदा करता है। जिन लोगों में समझ होती है वे ही समझाईश कर सकते हैं अर्थात् जैसा स्वयं ने समझा है वैसा अन्यों को समझा सकते हैं। उनकी उस समझ और समझाईश की शक्ति के कारण ही उन्हें समझदार कहा जाता है। ऐसे समझदार लोगों को सभी सामान्यजन आदर की दृष्टि से देखते हैं इसीलिए इनको श्रीमान कहा जाता है। तो इस बार खरी खरी में हम इन श्रीमान सझदारों की बात करेंगे। ये श्रीमान तब तक ही रहते हैं जब तक जैसा ये सोचते हैं, जैसा ये समझते हैं या जैसा समझते हैं वैसा करना प्रारंभ कर देते हैं। जब तक ये श्रीमान रहते हैं तब तक बोलकर नहीं कर कर समझाते हैं। जो अन्यों को समझा कर करवाना चाहते हैं वैसा पहले स्वयं करना प्रारंभ कर देते हैं। यदि वे ऐसा करते हैं तब ही आदर्श बन पाते हैं और लोगों के लिए अनुकरणीय हो जाते हैं। ऐसा होने पर समझाईश के लिए उनको वाणी के साधन की आवश्यकता नहीं रहती बल्कि उनका कृतित्व ही समझाईश करता जाता है और वह समझाईश सामने वाले पात्र पर स्थायी प्रभाव डालती है। इस प्रकार के समझदार वास्तव में श्रीमान होते हैं और इन्हें पूरे आदर के साथ श्रीमान कहा भी जाना चाहिए। लेकिन इसमें तो खरी खरी क्या हुई? ऐसे लोगों को तो श्रीमान कहा जाना चाहिए और वही कहा भी जा रहा है। लेकिन ऐसे भी अनेक समझदार होते हैं या यूं कहा जाये कि समझदारों का आधिक्य ऐसे ही लोगों का होता है जो समझाते तो हैं लेकिन करते नहीं हैं। वे केवल सांगोपांग आकलन करते हैं, समीक्षा करते हैं और उस समीक्षा का प्रकटीकरण कर सलाह मात्र देकर अपने दायित्व की इतिश्री कर लेते हैं। ऐसे समझदारों को ही इस आलेख में 'श्रीमान' कह कर संबोधित किया जा रहा है। ये श्रीमान सम्मान के नहीं बल्कि व्यंग्य के पात्र होते हैं। उन श्रीमान समझदार की छोटी सी बद्धि हर समस्या में अपनी चोंच लड़ाने से बाज नहीं आती। इनके पास हर समस्या के लिए सुलझा हुआ हल होता है जो स्वयं वे गाहे-बगाहे प्रकट करते ही रहते हैं। समाज में ऐसे श्रीमानों की भरमार है जो स्वयं कुछ नहीं करते लेकिन हर करने वाले को सलाह देने को प्रस्तुत होते हैं। इससे भी आगे वे हैं जो हर करने वाले के कार्य की समीक्षा करने को प्रस्तुत होते हैं, उनके करने के तरीके पर टिप्पणी करने को प्रस्तुत होते हैं। समाज के काम में ऐसे श्रीमानों की सेवाएं प्राय: मिलती ही रहती है। ऐसा भी कहा जा सकता है कि समाज के काम में उनकी चोंच कुछ अधिक ही चहचहाती है। हर सामाजिक कार्यकर्ता का इनसे पाला पड़ता ही रहता है। इनकी बातें सुनकर तो ऐसा लगता है जैसे इन्होंने समाज कार्य में तो पी.एच.डी. कर रखी है और इसीलिए अपने अनुभव हम से साझा कर रहे हैं लेकिन वास्तविकता इससे उलट ही होती है। कई बार उनका लंबा चौड़ा प्रवचन सुनने के बाद यदि उनसे किसी सामाजिक पत्रिका के शुल्क के लिए कहें तो अगली बार आने को कहकर टरका देते हैं। हमारे को समझाने वाले श्रीमान समझदारों को कभी किसी शिविर में आने का कहें तो बगलें झांकने लगते हैं और ऐसा होना स्वाभाविक भी है क्योंकि वे तो यह मान चुके होते हैं कि उन्होंने तो पी.एच.डी. कर रखी है, अब तो उनको कोई क्या सीखा सकता है। यदि ऐसे श्रीमान समझदार कुछ पढ़ाकु हों तो दुनियाभर की पुस्तकों की सामग्री से भारी मस्तिष्क का बोझ हल्का करने के लिए वे अपनी समझदारी के रोग को और अधिक बढाकर अपनी समझ को झाड़ते हैं और ऐसे में काम करने वाले को उनसे भेंट होने पर उन्हें झेलना ही पड़ता है। आजकल तो सोशल मीडिया की आभासी दुनिया में सन्मुख भेंट की आवश्यकता को ही समाप्त कर दिया है। वे दूर बैठे-बैठे ही अपनी समझदारी के बाण छोड़ते रहते हैं। लेकिन संघ मार्ग पर ऐसे समझदारों की दाल नहीं गलती इसलिए भूले भटके या पूर्व जन्मों के संस्कारों से वे इस मार्ग पर आ भी जाते हैं तो लंबे नहीं टिक पाते। परमेश्वर ऐसे समझदारों से बचायें।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	09.08.2019 से 12.08.2019 तक	मूंछाला महादेव, **घोड़ा घाटी,** नाथद्वारा (राजसमंद)
2.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	09.08.2019 से 12.08.2019 तक	मूलसिंहजी की ढाणी, शिव-हरसाणी मार्ग पर स्थित, **ताणुमानजी**, (बाड़मेर)
3.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	09.08.2019 से 12.08.2019 तक	**खबड़ाला**, (बाड़मेर) बाड़मेर, हरसाणी व गिराब से बसें उपलब्ध हैं।
4.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	09.08.2019 से 12.08.2019 तक	फाल्गुनी रिवर रिसोर्ट, पिलिकुला के पास वामंजूर, मुदुशेड्डी, **मैंगलोर** (कर्नाटक)
5.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	09.08.2019 से 12.08.2019 तक	वरिष्ठ नागरिक क्लब, सेक्टर-8, **YMCA** मिलन सड़क, **फरीदाबाद** (एनसीआर दिल्ली)
6.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	09.08.2019 से 12.08.2019 तक	निर्मल स्कूल, राम नगर के पास, जामखंडी बाईपास रोड **विजयपुर**, कर्नाटक संपर्क सूत्र, बालाजी सिंह-9980856535, देवेन्द्र प्रताप सिंह-7204047773
7.	तीन दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	10.08.2019 से 12.08.2019 तक	बा श्री हंसाबा चंदनसिंह राजपूत कॉलेज, **सिद्धपुर** (गुजरात) (पालनपुर-ऊंझा रोड पर स्थित
8.	तीन दिवसीय प्र.शि. (बालक)	10.08.2019 से 12.08.2019 तक	गंगेश्वर महादेव, **पासवाळ,** दांतीवाड़ा (गुजरात) (पांथावाड़ा से 2 किलोमीटर दूर)
9.	तीन दिवसीय प्र.शि. (बालक)	10.08.2019 से 12.08.2019 तक	क्षेमज माता मंदिर **काठी** (गोटी) तह. समी, जि. पाटन (गुजरात) संपर्क सूत्र : धर्मेन्द्रसिंह 9727418257
10.	तीन दिवसीय प्र.शि. (बालक)	10.08.2019 से 12.08.2019 तक	**शिहोर**, देत्रोज (गुजरात)
11.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	10.08.2019 से 13.08.2019 तक	खेतलाजी मंदिर, **मलावा** (सिरोही)
12.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	10.08.2019 से 13.08.2019 तक	दुदेश्वर महादेव मंदिर, **जेरण,** भीनमाल (जालोर)
13.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	10.08.2019 से 13.08.2019 तक	**तिंवरी,** जोधपुर
14.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	10.08.2019 से 13.08.2019 तक	**चेलक,** जैसलमेर। भाड़ली, जिंजनियाली, सिहड़ार से सुबह व जैसलमेर से दोपहर में बस उपलब्ध हैं।
15.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	10.08.2019 से 13.08.2019 तक	रघुकुल छात्रावास, **श्रीडूंगरगढ़** (बीकानेर)
16.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	10.08.2019 से 13.08.2019 तक	आलोक आश्रम (बीजीए), **बाड़मेर** (श्री क्षात्रपुरुषार्थ फाउंडेशन से जुड़े लोगों के लिए)
17.	तीन दिवसीय प्र.शि. (बालक)	14.08.2019 से 16.08.2019 तक	**डाबला,** तह. विजयपुर, जि. मेहसाणा (गुजरात) विजयनगर होकर डाबला पहुंचे।
18.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	15.08.2019 से 18.08.2019 तक	**मुंबई** (महाराष्ट्र)
19.	दो दिवसीय बाल शिविर	17.08.2019 से 18.08.2019 तक	प्राथमिक शाला, **काणेटी** (गुजरात)
20.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	22.08.2019 से 25.08.2019 तक	सम्राट पृथ्वीराज चौहान सभा भवन **मकराना** (नागौर)
21.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	22.08.2019 से 25.08.2019 तक	गोगाजी मंदिर **तेलवाड़ा** (बाड़मेर)
22.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	22.08.2019 से 25.08.2019 तक	**नोगामां/कलरिया** (बांसवाड़ा)
23.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	22.08.2019 से 25.08.2019 तक	मीरां मेदपाट भवन, **उदयपुर**

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

(पृष्ठ 1 का शेष) मर्यादाओं...

जिन्होंने औरंगजेब की नाक में दम कर एवं उसकी हर चाल को असफल कर राजपूतों की राजनीतिज्ञता की लाज रखी। मेवाड़-मारवाड़ एवं मरहठों को एक करने के प्रयास कर जिन्होंने इस धरती के सुहाग एवं स्वातंत्र्य की लाज रखी। जिन्होंने अपने ध्येय के लिए सभी प्रकार के अकल्पनीय कष्ट सहकर ध्येयनिष्ठ तपस्वियों के तप की लाज रखी। शत्रु की संतान का समुचित लालन पालन कर जिन्होंने क्षत्रिय चरित्र की लाज रखी। आत्मश्लाघा से दूर रहकर जिन्होंने सदैव सत्य के साथ खड़े रहकर सत्य की लाज रखी। अपने ही द्वारा पल्लवित एवं पुष्पित मारवाड़ से निष्कासित होने पर जिन्होंने किसी को दोष दिए बिना सहर्ष निर्वासन स्वीकार कर समाज चरित्र की लाज रखी। दुनिया की कृतघ्नता की कभी शिकायत न कर जिन्होंने उदारता की लाज रखी। भावना को सदैव कर्तव्य की दासी बनाकर जिन्होंने भावना और कर्तव्य दोनों की लाज रखी। जिन्होंने सामर्थ्यवान होते हुए भी किसी भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया और समस्त मर्यादाओं की मर्यादा की भी लाज रखी। वे दुर्गादास जो आज भी स्वाभिमान से समाज के गौरवपूर्ण जीवन के लिए जीने और मरने की चाह रखने वालों को प्रेरणा की भीख देकर दानवीरों के दान की लाज रख रहे हैं। उन्हीं दुर्गाबाबा की 381वीं जयंती हम सब 13 अगस्त एवं 14 अगस्त को मनाने जा रहे हैं। आईए उनसे प्रेरणा की भीख मांगे, समाज चरित्र की शिक्षा मांगे एवं कर्तव्य पर तिल तिल कर मिटने का धैर्य मांगे। वे क्षत्रियत्व के संपूर्ण प्रतिमूर्ति हैं तो हम भी इन्हें सादर नमन करते हुए क्षत्रियत्व पर आरूढ होने की क्षमता मांगें।

प्रश्न समाज के उत्तर गीता से

प्रश्न ३:- कुछ धर्मावलम्बियों का कथन है कि जितना उनके धर्मग्रन्थ में लिखा है, उतना ही सत्य है। अब दुबारा ऐसा महापुरुष हो नहीं सकता। किसी महापुरुष के अनुयायी कहते हैं कि बिना उस महापुरुष पर विश्वास किये स्वर्ग नहीं मिल सकता। महापुरुष के पीछे ही मानव-समाज सम्प्रदायों में विभाजित है। क्या उन्होंने कई धर्म बताये? धर्म के नाम पर मत-मतान्तर एवं तरह-तरह की पूजा-पद्धतियां कहां से आयीं?

उत्तर:- परमात्मा यदि परमधाम है तो सद्गुरु भजन की जागृति है। जागृति से पूर्तिपर्यन्त आत्मा को रथी बनाकर (चलाने की ड्यूटी भी) चलाने का दायित्व भी सद्गुरु द्वारा ही है। उनके संरक्षण में चलकर साधक मूल का स्पर्श कर लेता है। प्राप्ति के साथ ही गुरु का गुरुत्व मिल जाता है। वह गुरुत्व जितना गुरु महाराज में पूर्ण है उतना ही शिष्य में भी पूर्ण है, ऐसी दशा में प्राप्त होने योग्य कोई वस्तु अप्राप्त नहीं रह जाती जिसके लिये वह आहें भरे और न कोई विकार ही शेष रहा जिससे वह भयभीत हो। यहां गुरु शिष्य से पृथक् नहीं। कबीर कहते हैं— ''घट में ही गुरु हमारा।'' किन्तु साधनकाल में सद्गुरु की शरण, उनका सान्निध्य अनिवार्य है इसीलिये प्रत्येक महापुरुष ने सद्गुरु में दृढ़ श्रद्धा की आवश्यकता पर बल दिया है। किन्तु सद्गुरु भी एक प्रश्न है। क्रमशः गुरु घराने बनते गये। प्रत्येक घराने का गद्दीनशीं गुरु परम्परायें और रूढियां जोड़ता गया, जिनसे मतभेदों का सृजन हुआ। पुरुष को चाहिए कि सीधा एक परमात्मा में दृढ़ सकंल्प हो और जो उस एक परमात्मा को सम्बोधित करता हो, ऐसी किसी दो-ढाई अक्षर के नाम का जप करे। आपका मूल धर्मशास्त्र गीता है, इसका भली प्रकार अध्ययन कर हृदय में ढालें। जहां चिन्तन किंचित् ऊपर उठा, हृदय का आवरण हटा, श्रद्धा से जहां डोर लगी, भगवान ही प्रेरणा करके उन सद्गुरु का परिचय दे देंगे। **पुण्य पुंज बिनु मिलहिं न सन्ता। (मानस, ७/४४/३)**- जब तक पुण्य का पुंज वर्तमान में साथ नहीं देता सद्गुरु नहीं मिलते। पुण्य उसे कहते हैं जो आपको पूर्ण कर दे, तत्त्व की ओर ले चले। जो पतन की ओर ले चले उसे पाप-कर्म कहते हैं। गीतोक्त नियत कर्म का एक नाम पुण्य कर्म है-

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम्। ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः॥

अर्जुन! मैं राग-द्वेषादि द्वन्द्वों से ढंका हुआ सबके समक्ष विदित नहीं होता; किन्तु जिन पुण्य-कर्म करने वाले, सतत् मुझे जपनेवाले, व्रत में दृढ़ रहकर भजने वाले भक्तों के पाप नष्ट हो गये हैं, जिनका मोह से उत्पन्न आवरण नष्ट हो गया है, वे सम्पूर्ण ब्रह्म को जानते हैं, सम्पूर्ण कर्म को जानते हैं, सम्पूर्ण अध्यात्म को जानते हैं, अधियज्ञ सहित मुझे जानते हैं और मुझे जानकर मुझमें समाहित हो जाते हैं, इसके पश्चात् उनका पुनर्जन्म नहीं होता। वे सदा रहने वाला जीवन तथा सदा रहने वाली शांति प्राप्त कर लेते हैं।

सद्गुरुओं की गद्दी से शिक्षा मिलती है। कहीं प्रवेशिका की शिक्षा है, तो कहीं माध्यमिक की। कुछ न कुछ अंतर से सभी शिक्षा देते हैं; किन्तु परस्पर विरोधी शिक्षा तब मिलने लगती है, जब-

पूरा सद्गुरु ना मिला, मिली न सांची सीख। भेष यति का बनाय के, घर घर मांगे भीख॥

आपका प्रश्न है कि धर्म के स्थान पर मत-मतान्तरों की बाढ़, तरह-तरह की पूजा पद्धतियां कहां से आयीं? इसका कारण जन-समाज का एक धर्मशास्त्र से अनभिज्ञता या धर्मशास्त्र विस्मृत होने से ये विकृतियां आयीं। दूसरा कारण भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं, ''अर्जुन! आत्मदर्शन की नियत विधि इस निष्काम कर्मयोग में निश्चयात्मक क्रिया एक है।'' तो जो लोग बहुत-सी क्रियायें बताते हैं, क्या वे भजन नहीं करते? भगवान कहते हैं, ''अर्जुन! अविवेकियों की बुद्धि अनन्त शाखाओं वाली होती है इसलिए वे अनन्त क्रियाओं की संरचना कर डालते हैं। 'स्वार्गपरा:'- स्वर्ग ही श्रेष्ठ है, इसके आगे कुछ नहीं है, यहीं तक उनकी दृष्टि होती है। वे दिखाऊ शोभायुक्त वाणी में उन अनन्त क्रियाओं को व्यक्त भी करते हैं। शीर्षक तो सनातन शाश्वत का है, उसकी ओट में वे दिखावटी शोभायुक्त वाणी में नश्वर का उपदेश करते हैं। उनके वाणी की छाप जिन-जिन के हृदय पर पड़ती है उनकी बुद्धि भी नष्ट हो जाती है, न कि वे कुछ पाते हैं।

वे जन्म-मृत्युरूपी अनन्त फल भोगने में प्रवृत्त रहते हैं, अनन्त योनियों में भटकते ही रहते हैं।

अत: ईश्वर पथ की साधना एक ही है। पहले मनसहित इन्द्रियां विषयोन्मुखी प्रवाहित थीं, अब इष्टोन्मुखी प्रवाहित हो जाती हैं। संयम जैसे-जैसे सधता जाता है, साधना का स्तर उठता जाता है। संयम का स्तर ऊंचा-नीचा हो सकता है किन्तु दूसरी तीसरी कोई क्रिया नहीं हो सकती।

समरांगण के सम्राट ले. जनरल सगत सिंह की जन्म-शताब्दी

पराक्रम और पुरुषार्थ की प्रतिमूर्ति पद्म विभूषण और परम विशिष्ट सेवा मेडल से विभूषित स्व. ले. जनरल सगत सिंह की जन्म शताब्दी 14 जुलाई 2019 को गर्व एवं गरिमापूर्ण वातावरण में भारतीय सेना द्वारा मनायी गयी। जयपुर और जोधपुर में जनरल सगत सिंह की प्रतिमा का अनावरण किया गया और तीन महत्वपूर्ण युद्ध जीतने वाले सेना नायक को श्रद्धासुमन अर्पित कर देशवासियों ने अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित की। ले. जनरल सगत सिंह का व्यक्तित्व दुर्गादास राठौड़ की स्वामीभक्ति, महाराणा प्रताप का देश प्रेम और छत्रपति शिवाजी महाराज के रण कौशल को प्रतिबिम्बित करता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जनरल पैटन और रॉ मेल की छवि क्रमशः अमेरिकन और जर्मन सेना में जैसी रही उससे सवाई प्रतिष्ठा जनरल सगत सिंह की भारतीय सेना में है। उनके नेतृत्व में गोवा को पुर्तगाल से मुक्त कराया गया। सिक्किम के भारत में विलय की पटकथा उन्होंने जी.ओ.सी. 17 माउण्टेन डिविजन रहते हुए लिखी। चीन की अपराजेय का भ्रम नाथुला की लड़ाई में सितम्बर 1967 में जनरल सगत ने ही मिटाया। नाथुला आज भारत का भू भाग है इसका श्रेय भी उन्हीं के साहसी निर्णय को जाता है। नाथुला की लड़ाई के दौरान जब आर्टीलरी के फायर सपोर्ट की जरूरत पड़ी तो इसका निर्णय लेने का साहस कोई भी शीर्ष कमाण्डर नहीं जुटा पाये क्योंकि इसके लिए प्रधानमंत्री की आज्ञा जरूरी थी और उस समय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को सुबह नौ बजे से पहले सम्पर्क करने की इजाजत नहीं थी। इस प्रकार की गंभीर स्थिति में जनरल सगत ने सभी आदेशों को नजर अंदाज कर अपने सैनिकों की रक्षा और दुश्मन पर कहर बरपाने के इरादे से आर्टीलरी युनिट्स को फायर करने का हुक्म देकर बहुत भारी व्यक्तिगत जोखिम उठाया। दिसम्बर 1967 में मिजो राजद्रोहियों के आतंक का सफाया करने के लिए फील्डमार्शल मानेकशॉ ने उनको जीओसी 101 कॉमजॉन नियुक्त किया। मिजो हिल्स में राजद्रोहियों का सफाया कर उन पर काबू पाने के प्रयासों के लिए जनरल सगत को परम विशिष्ठ सेवा मेडल से नवाजा गया। नवम्बर 1970 में आपको ले. जनरल की रैंक पर जी.ओ.सी. 4 कोर के पद पर तेजपुर तैनात किया गया। 3 दिसम्बर 1971 को पाकिस्तान ने हमारी सीमा के अंदर हवाई हमले कर युद्ध का आगाज किया। जनरल सगत को एक बार फिर अपना रणकौशल प्रदर्शित करने का सुअवसर मिल गया, नतीजन बांग्लादेश का जन्म और 93000 पाक सैनिकों का समर्पण। बांगलादेश की लड़ाई को शीघ्र अपने मुकाम पर समेटने की सामरिक जरूरत थी क्योंकि पाकिस्तान की मदद के लिए अमेरिकन जहाजी बेड़ा चल पड़ा था। इस मजबूरी को सगत ने ठीक से समझा और मेघना नदी पार कर ढाका पहुंच दुनिया को चकित कर दिया।

जनरल सगत एक प्रबुद्ध और दिलेर सेना नायक थे जिन्होंने देश हित में भारी से भारी जोखिम उठाने में कभी संकोच नहीं किया, उनके निजी स्वार्थ की परछाई उनके निर्णयों और क्रियाकलापों पर कभी नजर नहीं आई। मिलिट्री हिस्ट्री के छात्र तो उनके बारे में अध्ययन करते ही हैं, अच्छा होगा जब उनकी जीवनी हमारे शैक्षणिक पाठ्यक्रम का हिस्सा बने ताकि युवा पीढी हमारे दुर्लभ सेना नायकों की उपलब्धियों को आत्मसात कर प्रेरित हो सके। पद्मभूषण ले. जनरल सगतसिंह पी वी एस एम भारत रत्न अवार्ड के सबसे योग्य हकदार हैं। उनके जीवनकाल में तो यह सम्मान उन्हें नहीं दिया गया परन्तु अब सैनिकों का मनोबल बढ़ाने तथा अपनी चुनाव प्रणाली की निष्पक्षता में विश्वास जागृत करने के लिए उन्हें मरणोपरान्त इस सम्मान से नवाजा जाना ही चाहिए।— **कर्नल हिम्मतसिंह पीह**

मौर्योत्तर काल

मालव भारतीय इतिहास में मालवों का नाम सर्वविदित है। मालव जाति का प्रारंभिक साहित्यक उल्लेख यूनानियों की रचनाओं में मिलता है जो सिकन्दर के भारत आक्रमण का वर्णन करते हैं सिकन्दर के भारत आक्रमण के समय मालवों का राज्य पंजाब में झेलम और सिंधु नदी के आस-पास था। यूनानियों ने इनका उल्लेख मलोई और ओक्सीड्रेकाई नाम से किया है। सिकन्दर के आक्रमण के समय मलोई और क्षुद्रकों के संघ ने उसके आक्रमण का प्रबल प्रतिशोध किया। मालव (मलोई) वीरतापूर्वक लड़े, परन्तु परास्त हुए। परास्त मालव जाति का यूनानी सेना द्वारा कत्लेआम किया गया। पराजित मालवों को अपना मूल प्रदेश छोड़ना पड़ा और वे पूर्वी राजस्थान और मध्यप्रदेश के पश्चिम भाग में बस गए। इन क्षेत्रों में उन्होंने लगभग चौथी शताब्दी तक शासन किया। इस दौरान अपनी स्वतंत्रता के लिए उन्हें कभी शकों से, कभी कुषाणों से निरन्तर संघर्ष करना पड़ा। अंत में सम्राट समुद्रगुप्त से परास्त होने के बाद भारतीय राजनीतिक रंगमंच से मालवों का किरदार सदैव के लिए समाप्त हो गया।

यौधेय- यौधेय प्राचीन भारत का एक महत्वपूर्ण गणतंत्र था। वे लगभग एक हजार वर्षों तक किसी न किसी रूप में भारतीय इतिहास में अपनी भूमिका निभाते रहे। यौधेय युधिष्ठर के वंशज माने जाते थे, वे युधिष्ठर के एक पुत्र देवक की संतति माने जाते हैं। गणराज्य के रूप में यौधेयों का प्रथम उल्लेख पाणिनी की अष्टाध्यायी में मिलता है जहां इनका वर्णन आयुध जीवि संघ के रूप में हुआ है। सिकंदर के आक्रमण के समय यौधेयों का राज्य पूर्वी पंजाब में था। उनका राज्य विस्तार वर्तमान लुधियाना से सहारनपुर और सहारनपुर से बहावलपुर तक था। पहली शताब्दी में यौधेय पंजाब से राजस्थान की तरफ स्थानान्तरित हुए और भरतपुर को अपने साम्राज्य का केन्द्र बनाया। शक शासक रूद्रदामन के आक्रमण का इन्होंने सफलतापूर्वक सामना किया। जिस कुषाण वंश का शासन भारत के बिहार से लेकर मध्य एशिया तक विस्तृत था उस कुषाण वंश को उसके पूर्वी प्रान्तों से उखाड़ फेंकने का श्रेय यौधेयों को ही जाता है। समुद्र गुप्त के राज्य विस्तार के दौरान परास्त होकर भारतीय इतिहास से वे सदैव के लिए लुप्त हो गए।

अर्जुनायन- इनका उल्लेख पाणिनि के अष्टाध्यायी में सर्वप्रथम मिलता है। अर्जुनायन स्वयं को अर्जुन की संतति मानते थे। प्रारंभ में इनका राज्य उत्तर-पश्चिम भारत में था। परवर्ती मौर्यकाल में ये अपने मूल स्थान से हट कर अलवर-भरतपुर के क्षेत्र में अपना शासन स्थापित करने में सफल रहे। कुषाणों से लम्बे संघर्ष के बाद ये अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करने में सफल रहे। गुप्तकाल के प्रारंभिक समय तक इनके स्वतंत्र अस्तित्व के प्रमाण मिलते हैं।

नाग वंश: प्राचीन भारतीय इतिहास में सनातन धर्म के उद्धारक के रूप में नागों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। नाग वंश का शासन मथुरा, विदिशा व पद्मावती इन तीन शाखाओं में विभक्त था। इन तीनों में से पद्मावती का वंश अधिक महत्वपूर्ण है। यहां के नागवंशी शासक भारशिव कहलाते थे। इनकी राजधानी मध्यप्रदेश के मुरैना में स्थित पद्मवाया (पद्मावती) थी। इस वंश का प्रतापी शासक भवनाग था जिसने गंगा किनारे दस अश्वमेघ यज्ञ किए थे। इसका शासन काल चौथी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में था। इस समय नाग शक्ति अपने चरमोत्कर्ष पर थी। तत्कालीन भारत की राजनैतिक शक्तियां नाग वंश में अपने वैवाहिक संबंध स्थापित करने में गौरव का अनुभव करती थी।

मौर्यों के पतन व गुप्तों के उत्कर्ष के मध्य के इस काल में अनेक छोटे-छोटे राजवंशों ने उत्तर भारत में अनेक स्थानों पर शासन स्थपित किया जिनमें मध्यमिका (चित्तौड़) के शिवि, बड़वा (कोटा) से मौखरि, बघेल खंड में मघ, बुन्देल खंड में वाकाटक आदि प्रमुख थे।

क्रमशः

(शेष पृष्ठ 4 का)

समाज का काम ....

उदाहरण के लिए हाल ही की सरकार द्वारा आर्थिक आधार पर आरक्षण दिया लेकिन उसकी शर्तें उसमें अवरोधक बन गईं। ऐसे में उन शर्तों को हटवाने के लिए यदि कोई प्रयास किया जाता है तो वह भी समाज का काम माना जाएगा क्योंकि इससे समाज का कोई व्यक्ति विशेष ही नहीं बल्कि बहुत बड़ा हिस्सा प्रभावित होता है।

ऐसे ही अनेक अन्य काम भी हो सकते हैं। ये सब काम भी समाज के काम माने जाएंगे। इस प्रकार समाज के काम और समाज के व्यक्ति के काम में यह अंतर है। केवल अपने लिए जीने वाले से वह व्यक्ति श्रेष्ठ है जो समाज के किसी व्यक्ति के लिए कुछ करता है लेकिन फिर भी वह समाज का काम तो नहीं ही माना जा सकता। श्रेष्ठता के स्तर पर तो वह काम समाज के काम से निम्नतर ही माना जाएगा। लेकिन समाज की वर्तमान अवस्था में अधिकांश लोगों ने समाज के व्यक्ति के काम को ही समाज का काम मान लिया है। किसी अधिकारी की अच्छी जगह पोस्टिंग करवाना, किसी अपने परिचित को नौकरी दिलवाने में सहायता करना, अपने जानकार किसी को आर्थिक मदद मुहैया करवाना या बीमारी के समय अस्पताल में भर्ती करवाना आदि को ही समाज का काम माना जा रहा है। ऐसे में वे सभी विषय उपेक्षित हो जाते हैं जो संपूर्ण समाज को प्रभावित करते हैं। इसलिए उदात्त सामाजिक भाव वाले ऊर्जावान लोगों को अपनी ऊर्जा को प्राथमिकता से समाज के लोगों के काम करवाने की अपेक्षा समाज के काम में लगाना चाहिए। यदि हम कुछ करने की स्थिति में हैं तो प्राथमिकता समाज के काम को देनी चाहिए ताकि हमारी उस ऊर्जा एवं स्थिति का लाभ अधिक लोगों को निरपेक्ष भाव से मिल सके। ऐसा करने में किसी व्यक्ति विशेष से बदले में कोई अपेक्षा भी पैदा नहीं होती क्योंकि हम जो कर रहे हैं वह किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं बल्कि पूरे समाज के लिए कर रहे हैं। यदि हम जो कर रहे हैं उसके लिए अपेक्षा रहित हो जाएं तो यही तो निष्काम भाव है और निष्काम भाव ही तो निष्काम योग बनता है और योग ही तो अंतिम उपलब्धि है। इसलिए यदि हमें हमारे सामाजिक भाव को योग का साधन बनाना है तो समाज के व्यक्ति के काम की अपेक्षा समाज के काम को प्राथमिकता देना प्रारंभ करें। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें इसी ओर प्रवाहित करता है इसीलिए तो इसे संपूर्ण योग मार्ग कहा गया है।

सोढा कीरतसिंह जगमालोत का बलिदान दिवस मनाया

भूंका के ठाकुर सोढ़ा कीरतसिंह जगमालोत का 213 वां बलिदान दिवस 18 जुलाई को मेहरानगढ स्थित उनकी छत्री पर मनाया गया। इस अवसर उनके स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की गई एवं उनके इतिहास के बारे में जानकारी दी गई। अखिल भारतीय परमार महासंघ के संस्थापक अभियंता जालमसिंह ने पूजा अर्चना की। विक्रमसिंह बंधुड़ा, हर्षवर्धनसिंह कुहड़ी, श्रवणकुमार भील, वेद दीक्षित सहित अनेक लोग इस अवसर पर उपस्थित रहे।

पृष्ठ एक का शेष

वैराग्य में...

लंबे समय बाद उसे याद आने पर वह सुअर बने पिता को मारने पहुंचा तो सुअर ने कहा अब मुझे मत मार क्योंकि मेरे पत्नी, बच्चे आदि भरापूरा परिवार है, मैंने भावुकतावश तुम्हें मुझे मारने के लिए कहा था। यही स्थिति हम सब की है। किसी संत, महात्मा के पास सत्संग हेतु हम जाते हैं तो हमें भी वैराग्य उत्पन्न होता है एवं घर आने पर परिवार संसार में हमारा वह वैराग्य खो जाता है। इसलिए आवश्यकता हमारे वैराग्य में स्थायित्व लाने की है क्योंकि वही हमें जीवन के शाश्वत उद्देश्य की ओर बढ़ने में सहायक बनता है। संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघ शक्ति में आयोजित गुरु पूर्णिमा उत्सव को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि हम सब भाग्यशाली हैं कि पूज्य तनसिंह जी ने हम सबको ईश्वर की ओर बढ़ने का सहज एवं सरल मार्ग बताया है। उन्होंने हमारे अंतर में सुप्त पड़ी दैवी संपदा को जागृत करने के लिए जीवन के आठ सूत्र बताये जिनका पालन प्रत्येक व्यक्ति अपने सभी सांसारिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए आसानी से कर सकता है। इन सूत्रों में शौच (शुद्धि), स्तवन, स्वाध्याय, श्रम, सेवा, मनन, मौन और समाधी शामिल है। संघ के शिविरों में इनके बारे में विस्तार से बताया जाता है एवं अभ्यास भी करवाया जाता है। उन्होंने कहा कि हम अपनी तुच्छता को त्यागकर जिस दिन से जीवन के मूल उद्देश्य को समझना शुरू करते हैं उसी दिन से हमारे भीतर गुरु अपना कार्य करना शुरू कर देता है। ऐसा गुरु हमें अपना शिष्य नहीं बनाता बल्कि गुरु ही बनाता है।

16 जुलाई को आषाढ सुदी पूर्णिमा के दिन केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में गुरुपूर्णिमा उत्सव मनाया गया जिसमें संघ के स्वयंसेवक एवं सहयोगी सपरिवार शामिल हुए। यज्ञ के साथ प्रारंभ हुए उत्सव में स्वामी अड़गड़ानंदजी महाराज के शिष्य अकेला महाराज के प्रवचन का ऑडियो सुनाया गया। स्वामीजी ने कहा जब तक गुरु द्वारा बताये गए ध्येय और साधना को हम आचरण में नहीं लाते तब तक गुरु पूर्णिमा मनाने का महत्व फलीभूत नहीं होता। उन्होंने कबीर जी के एक भजन के माध्यम से समझाया कि स्वयं को अहंकार शून्य बनाने पर ही परम साध्य का मार्ग अनावृत होता है।

जोधपुर स्थित संघ कार्यालय 'तनायन' में भी गुरु पूर्णिमा के अवसर पर कार्यक्रम रखा गया। पुष्पांजलि व प्रार्थना के पश्चात् यह चर्चा की गई कि गुरु शिष्य को ढूंढता है, शिष्य गुरु की पहचान नहीं कर सकता है। शिष्य के विकास की आवश्यकता के अनुरूप परमेश्वर सद्गुरु के मिलने का संयोग बिठाते हैं। हमारे जीवन में संघ ने हमें ढूंढा एवं परम सिद्धि के मार्ग पर प्रवृत किया इसलिए संघ ही हमारे लिए गुरु हैं। संघ में आने के बाद ही हमारा मार्ग प्रकाशित हुआ है, यहां ही हमारी कुंठाओं की गांठें खुलती है, यहीं हमे परमेश्वर की अमर प्रीत के दर्शन होते हैं, जो मन से यहां आए हैं उनको कहीं अन्यत्र जाना अच्छा नहीं लगता। यही तो सच्चे गुरु के बारे में शास्त्र बताते हैं और हमें परमेश्वर की कृपा से संघ रूप में ऐसा ही गुरु मिला है, उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए स्वयं को योग्य बनाना ही साधना है।

इसी क्रम में शेरगढ़ प्रांत के बिंजाबाबा स्थान पर गाजन माता भाखरी की तलहटी में शेरगढ़ प्रांत के स्वयंसेवकों द्वारा गुरु पूर्णिमा महोत्सव का आयोजन किया गया।

शिक्षण देने से पहले.....

दो दिन चली इस बैठक में माननीय संघ प्रमुख के सान्निध्य में दायित्व निर्वहन के लिए न्यूनतम अहर्ताओं को लेकर विस्तृत चर्चा की गई एवं शिविर आदि की न्यूनतम अहर्ताएं तय की गईं। दायित्व सौंपते समय सहयोगी भाव, व्यवस्थित जीवन, शिष्टाचार, मिलनसारिता, अनुशासन, परिश्रम, मितव्ययता, जिज्ञासा, समझ, समझाईश, अभिव्यक्ति, भावुकता, नेतृत्व क्षमता, विनय, संघ शिक्षण की क्षमता, स्थानीय व्यवहार एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि आदि बिंदुओं पर विचार किया जाना चाहिए। माननीय संघप्रमुख श्री ने उपर्युक्त बिंदुओं को विस्तार से समझाया। शाखा के शिक्षण प्रमुख से लेकर संघ प्रमुख तक के सहयोगी वर्ग की न्यूनतम अहर्ताओं पर भी विस्तार से चर्चा की गई। संघप्रमुखश्री ने अध्ययनशीलता पर विशेष जोर दिया एवं कहा कि संघ का काम करने वाले को संघ साहित्य, गीता व रामायण का तो अध्ययन आवश्यक रूप से किया हुआ होना ही चाहिए। शिविरों के नामों को लेकर भी बदलाव का निर्णय लिया गया एवं नया नामकरण चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर, सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर एवं ग्यारह दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के रूप में किया गया। चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का कार्यक्रम शिविर संचालक द्वारा स्वयं अपने स्तर पर बनाया जाता है। इसमें समानता रहे इसके लिए इसके बिन्दुओं पर भी विस्तार से चर्चा की गई। माननीय संघ प्रमुख श्री ने निर्देश दिया कि शिविरों की भोजन व्यवस्था साधारण ही होनी चाहिए। चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में समय पर भोजन बने इस बात का व्यवस्थापकों से आग्रह करें लेकिन मीठा आदि विशेष भोजन बनाने के आग्रह को विनयपूर्वक नकार कर साधारण भोजन ही बनायें। संचालन प्रमुख जी के निर्देशन में संपन्न इस बैठक में वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीरसिंह सरवड़ी व दीपसिंहजी बेण्यांकाबास का भी सानिध्य मिला।

प्रतिभा

कुलदीपसिंह-बिशाला निवासी जेतमालसिंह के पुत्र कुलदीपसिंह ने 12वीं कक्षा (विज्ञान संकाय) में 97 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। जेतमालसिंह संघ के स्वयंसेवक हैं। कुलदीप बेडमिंटन व शतरंज का राज्य स्तरीय खिलाड़ी हैं।

सुरेन्द्रपालसिंह : पनराज पुरा (रणधा) निवासी दीपसिंह के पुत्र सुरेन्द्रपालसिंह ने 10वीं कक्षा में 82.20% अंक हासिल किए हैं। दीपसिंह संघ के स्वयंसेवक हैं।

उर्मिला की आठवी रैंक : झुंझुनू जिले के सुलताना निवासी नरेन्द्रसिंह एवं सुमन कंवर की पुत्री उर्मिला कंवर ने सी.एस. फाउण्डेशन परीक्षण में अखिल भारतीय स्तर पर 8वीं रैंक हासिल की है।

अजय सिंह को स्वर्ण पदक : झुंझुनूं जिले के गांव खुड़ोत निवासी अजय सिंह शेखावत ने कॉमनवेल्थ गेम्स 2019 में भारोत्तोलन में राष्ट्रमंडल चैंपियनशिप में रिकॉर्ड कायम करते हुए 12 जुलाई को स्वर्ण पदक हासिल किया। अजय सिंह को राष्ट्र का मान बढाने के लिए बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

मनीषा कंवर : महरोली (सीकर) निवासी भगवान सिंह व मिंटू कंवर की पुत्री मनीषा कंवर ने दसवीं कक्षा में 84.67 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

रामस्वरूप सिंह : चुरु जिले के लुणासर निवासी नरपतसिंह के पुत्र रामस्वरूप सिंह ने बारहवीं (विज्ञान वर्ग) में 84.75% अंक हासिल किए हैं। छात्र ने 2017 में 10वीं में भी 93% अंक हासिल किए थे।

आरक्षण मुद्दे पर प्रेस वार्ता

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन द्वारा आर्थिक आधार पर आरक्षण विषय पर मीडिया के माध्यम से अपनी बात सरकार तक पहुंचाने के लिए प्रेस क्लब जयपुर में 14 जुलाई को प्रेस वार्ता रखी गई। प्रेस वार्ता में फाउण्डेशन के संयोजक यशवर्धनसिंह ने समाचार पत्रों एवं समाचार चैनल्स के प्रतिनिधियों को बताया कि भारतीय संविधान के भाग 3 (मूल अधिकार) के आर्टिकल 15 (5) एवं 16 (4) तथा 16 (4 ए) और 16 (4 बी) के अनुसार गुजरात सहित अन्य राज्यों ने केन्द्र सरकार द्वारा पारित आर्थिक आधार पर आरक्षण की अहर्ता शर्तों में संशोधन कर केवल आठ लाख वार्षिक आय को ही एक मात्र शर्त रखा है। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन आरक्षण से वंचित सभी वर्गों के सहयोग से विगत 5 माह से राज्य सरकार तक यह मांग पहुंचाने का प्रयास कर रहा है कि राजस्थान में भी केवल इस एक शर्त के अलावा शेष शर्तें हटायी जावें। इस हेतु विभिन्न जन प्रतिनिधियों से मिलकर उन्हें सहयोग करने का आग्रह किया गया। अब तक 50 से अधिक जन प्रतिनिधियों जिनमें केंद्रीय मंत्री, राज्य सरकार के मंत्री, सांसद, विधायक आदि शामिल हैं, से मिलकर सहयोग मांगा है और सभी ने सकारात्मक सहयोग करने का आश्वासन दिया है। विधानसभा के चालू सत्र में इसके इस विषय पर विस्तार से चर्चा हो इसके लिए विधायकों एवं मंत्रियों सहित विधानसभा अध्यक्ष से भी आग्रह किया गया है। माननीय उपमुख्यमंत्री से मिलकर भी इस संबंध में ज्ञापन सौंपा गया है। मीडिया के प्रतिनिधियों को अब तक प्राप्त सहमति पत्र दिखाये गए एवं विधायकों के आश्वासन वाले वीडियो दिखाये गए। प्रेस वार्ता में बीकानेर टीम के सदस्य रामसिंह चरकड़ा, जयपुर टीम के अभयराजसिंह मूंडरु, ओमेन्द्रसिंह चौरु आदि भी उपस्थित रहे। पत्रकारों ने सकारात्मक सहयोग करने का आश्वासन दिया। राजस्थान पत्रिका ने 15 जुलाई को इस विषय को प्रमुखता से छापा। अंग्रेजी अखबार टाइम्स ऑफ इंडिया ने भी प्रमुखता से इसे प्रकाशित कर हमें इस विषय को सार्वजनिक बहस का विषय बनाने में सहयोग दिया।

साणंद मे तेजस्वी विद्यार्थी सम्मान समारोह

श्री राजपूत विकास ट्रस्ट साणंद (गुजरात) का 12वां तेजस्वी विद्यार्थी सम्मान समारोह 21 जुलाई को साणंद के नगरपालिका सभा भवन में संपन्न हुआ। इस समारोह में कक्षा 9वीं से 12वीं तक स्नातक, अधि स्नातक, विशिष्ट अभ्यास क्रमों, खेल, संगीत सहित सभी क्षेत्रों में उपलब्धि हासिल करने वाले युवकों व युवतियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अजीतसिंह पी. राणा (प्रोफेसर व विधायक डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर ऑपन युनिवर्सिटी, अहमदाबाद) ने की एवं पद्मिनी बा एन परमार (असिस्टेंट कमिश्नर इनकम टैक्स), रविराज सिंह बाघेला (असिस्टेन्ट कमिश्नर जीएसटी) व भरतसिंह वाघेला (व्यवस्थापक मुक्ति मंडल आश्रम, साणंद) विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। वक्ताओं ने ऐसे कार्यक्रम को विद्यार्थियों की प्रेरणा के लिए आवश्यक बताया। युवाओं से विशेष प्रयास कर अपनी प्रतिभा को उभार कर समाज का नाम रोशन करने का आग्रह किया। इस अवसर पर श्री राजपूत विकास ट्रस्ट की महिला शाखा का गठन किया गया। कार्यक्रम का संचालन संस्था के अध्यक्ष जितेन्द्रसिंह वाघेला ने किया एवं मंत्री नवलसिंह ने आभार प्रकट किया।

जनरल सगतसिंह की स्मृति में कार्यक्रम: क्षत्रिय सभा बीकानेर द्वारा जनरल सगतसिंह जन्म शताब्दी के उपलक्ष में 14 जुलाई को बीदासर हाउस, बीकानेर में उनकी स्मृति में कार्यक्रम रखा गया। मुख्य वक्ता ब्रिगेडियर जगमालसिंह ने कहा कि सगत सिंह वे सेनापति थे जो स्वयं के निर्णयों से युद्ध जीत जाते थे। उन्होंने भारत को गोवा और विश्व को बांग्लादेश दिया। सभाध्यक्ष बजरंगसिंह रॉयल, अयूब अली कायमखानी, जगमालसिंह पायली, समुद्रसिंह राठौड़, सुरेन्द्रसिंह ख्याती ने भी उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में विचार रखे।

परमवीर पीरुसिंह का शहादत दिवस मनाया: 1948 के भारत पाक युद्ध में अद्भुद् शौर्य का प्रदर्शन करने वाले परमवीर चक्र विजेता कंपनी हवलदार पीरुसिंह शेखावत का 71वां शहादत दिवस 18 जुलाई को क्षत्रिय सभा बीकानेर के सभागार में मनाया गया। इस अवसर ब्रिगेडियर जगमालसिंह सहित अनेक वक्ताओं ने परमवीर पीरुसिंह को भारत पाक युद्ध का हीरो बताते हुए उनके कृतित्व के बारे में बताया।

नागौर, फलोदी, सांचौर, पूंगल व भैंसड़ा में बैठक

समाज के सकारात्मक सोच वाले युवाओं को संयोजित कर उन्हें समाज के लिए अधिकतम उपयोगी बनाने के लिए गठित श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की नागौर जिले की बैठक 27 जुलाई को श्री अमर राजपूत छात्रावास नागौर में रखी गई। नागौर, जायल, खींवसर, मेड़ता, डेगनाा क्षेत्र के लिए आयोजित इस बैठक में फाउंडेशन के संयोजक यशवर्धनसिंह झेरली ने फाउंडेशन के उद्देश्यों एवं कार्य प्रणाली पर विस्तार से जानकारी दी। बैठक में औंकारसिंह, देऊ, नारायणसिंह गोटन, भारतसिंह गगवाना, जितेन्द्रसिंह आकेली, भवानीसिंह सिंगड़ ने फाउंडेशन के संदेश को तहसील व ग्राम स्तर तक ले जाने हेतु बैठकें करने, सरकारी योजनाओं के प्रति समाज के लोगों को जागरुक करने एवं टीम बनाकर सहयोगी भाव से कार्य करने की आवश्यकता जताई। 28 जुलाई को राजपूत छात्रावास फलोदी में बैठक रखी गई जिसमें संयोजक यशवर्धनसिंह ने कहा कि यह भारत हमारे पूर्वजों के त्याग एवं बलिदान द्वारा रक्षित, पुष्पित एवं पल्लवित हुआ है। इसलिए हमें इसे अपना मानकर संविधान प्रदत्त साधनों का उपयोग करते हुए आज भी दायित्व भाव से आमजन के लिए काम करना चाहिए। श्री क्षात्र फाउंडेशन ऐसे ही लोगों को खोजकर उन्हें संयोजित करने का अभियान है।

इसी क्रम में 14 जुलाई को राव बल्लूजी राजपूत छात्रावास सांचोर में तहसील स्तरीय बैठक रखी गई। बैठक में तहसील क्षेत्र के चुनिंदा समाज बंधुओं के साथ फाउंडेशन की स्थापना की पृष्ठभूमि, संघ से संबद्धता, उद्देश्यों, कार्य प्रणाली एवं अब तक हुए कार्य को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। आगामी अगस्त माह की समाप्ति तक तहसील के चार अलग-अलग भागों में ऐसे ही आमंत्रित लोगों की चार बैठकें कर यहां हुई चर्चा को आगे विस्तारित करने का निर्णय लिया गया। बैठक में राव मोहनसिंह चितलवाना, नरपतसिंह अरणाय, हिन्दू सिंह दूठवा, महेन्द्रसिंह झाब, महावीर सिंह दातिया, कोजराजसिंह चारणीम, महेन्द्रसिंह कारोला आदि सहित आमंत्रिकत समाज बंधुओं ने भागीदारी निभाई। जालोर से संघ के संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी व गणपतसिंह भंवराणी भी आये। इसी अभियान के तहत 21 जुलाई को बीकानेर जिले की पुंगल तहसील में बैठक रखी गई जिसमें बीकानेर टीम के सदस्य रामसिंह चरकड़ा ने फाउंडेशन के उद्देश्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। पोकरण क्षेत्र में फाउंडेशन के संदेश को पंचायत स्तर तक ले जाने के अभियान के तहत 28 जुलाई को भैंसड़ा ग्राम पंचायत में बैठक रखी गई जिसमें पोकरण टीम के सदस्यों ने उपस्थित समाज बंधुओं को फाउंडेशन के गठन की भूमिका एवं उद्देश्यों की जानाकारी दी।

टीम नागौर

ओंकार सिंह देऊ
तेज सिंह बालवा
नारायण सिंह गोटन
रिड़मल सिंह पांचला सिद्धा
जितेन्द्र सिंह आकेली बी
जुगल सिंह आकोड़ा
भारत सिंह गगवाना
अजयपाल सिंह सुरजनियावास
जब्बर सिंह दौलतपुरा
अरविन्द सिंह बालवा

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org